Psycho-analysis B.A - II - (H)
PAPER - IV

मनोविश्लेषण

फ्रायड के मनोविश्लेषण का मुख्य आधार मूल प्रवृत्तियाँ है। इनके अनुसार प्रत्येक मनुष्य में दो परस्परविरोधी मूल प्रवृत्तियाँ रहती है – (क) जीवन की मूल प्रवृत्ति और (ख) मृत्यु की मूल प्रवृत्ति। इन मूल प्रवृत्तियों को ग्रीक (Greek) भाषा में क्रमशः 'इरोज' (eros) और 'थानाटस' (thanatos) कहा जाता है। फ्रायड का विचार था कि प्रत्येक मनुष्य में ये दोनों मूल प्रवृत्तियाँ साथ-साथ रहती है तथा मनुष्य की सभी प्रकार की क्रियाओं के प्रेरणास्रोत के रूप में कार्य करती है। फ्रायड के मतानुसार व्यक्ति के व्यक्तित्व-विकास में भी इन विरोधी प्रवृत्तियों के फलस्वरूप उत्पन्न द्वन्द्वों का मुख्य हाथ रहता है। फ्रायड ने अपने विचार को स्पष्ट करने हेतु मन की व्याख्या गत्यात्मक एवं आकारात्मक पहलुओं द्वारा की है। इनका वर्णन एवं व्याख्या करना आवश्यक है।

मानसिक पहलू :– मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से 'मन' का तात्पर्य व्यक्ति या आत्मा या अन्तरात्मा से किया जाता है। फ्रायड ने अपने मनोविश्लेषणात्मक सिद्धांत में इस अन्तरात्मा को व्यक्तित्व का मूल माना है।

फ्रायड ने इस अन्तरात्मा या मन के दो पहलुओं पर प्रकाश डाला है। (क) गत्यात्मक पहलू और (ख) आकारात्मक पहलू। मन के इन दोनों पहलुओं के कारण ही किसी व्यक्ति का व्यक्तित्व

अपूर्व होता है।

मन का गत्यात्मक पहलू :— फ्रायड ने मनोविश्लेषण सिद्धांत के अन्तर्गत व्यक्तित्व के परस्परविरोधी द्वंद्वों की चर्चा की है। इन द्वंद्वों में जीवन और मृत्यु की मूल प्रवृत्ति, सक्रियता और निष्क्रियता, स्त्रीत्व और पुरुषत्व, सत्व और यथार्थता का सिद्धांत, सुख-दुख और प्रेम-घृणा इत्यादि प्रमुख हैं। प्रत्येक व्यक्ति के व्यक्तित्व में ये परस्परविरोधी प्रवृत्तियाँ पाई जाती हैं, जिनके कारण संघर्ष की परिस्थितियाँ उपस्थित होती रहती हैं। मन के गत्यात्मक स्वरूप की स्पष्ट झाँकी हमें तब मिलती है, जब हम किसी संघर्षमय परिस्थिति का शिकार होते हैं। जब व्यक्ति एक से अधिक समान और विरोधी प्रेरकों का शिकार होता है, तब व्यक्ति के व्यक्तित्व में परिवर्तन की संभावना भी बढ़ जाती है। परिवर्तन की इस संभावना को ही गत्यात्मकता कहा जाता है।

फ्रायड ने मन के गत्यात्मक पहलू के अन्तर्गत मन के उन प्रतिनिधियों को माना है जिनके द्वारा मूल प्रवृत्तियों से उत्पन्न संघर्षों का समाधान होता है। ये प्रतिनिधि क्रमशः 'उपाहं' (Id), 'अहं' (Ego), एवं 'पराहं' (Super Ego) हैं।

(1) उपाहं (Id) :— उपाहं मन के गत्यात्मक पहलू का पहला प्रतिनिधि है। एक जन्मजात शिशु में केवल उपाहं की प्रवृत्तियों का अंश होता है। यह अचेतन होता है, इसलिए इसके बारे में

समझना आसान नही है। चूंकि बच्चों में उपाहं की प्रवृत्तियों की भरमार रहती है, अतः बच्चों की स्वाभाविक प्रवृत्तियों को ध्यान में रखकर आसानी से उपाहं की विशेषताओं को समझा जा सकता है। बच्चों में विभिन्न प्रकार की इच्छाएँ बिना समय और परिस्थितियों का विचार किए उत्पन्न होती रहती है। उपाहं की विशेषताएँ प्रमुख है।

Next day.

Hrishi Kesh lal.
Deptt - Psychology.
B.M.L. Rahika.